

मुख्यता (wie eben) f. die erste Stelle, der oberste Rang, Vorrang JĀś. 1, 264. येनाविशति मुख्यताम् BĀG. P. 4, 22, 33. गदापरिषदेषु सर्वास्त्रेषु च तावुभौ । अचिरान्मुख्यतां प्राप्तिं सर्वलोकैः धनुष्मताम् ॥ HARIV. 4929. ΚΑΤΗΑΣ. 32, 263. केवलानुमानस्य मुख्यतया Schol. zu KAP. 1, 61. लेभे तद्रणमुख्यताम् BĀG. P. 6, 18, 17.

मुख्यत्व (wie eben) n. dass.: महत्त्वमधिमुख्यत्वं द्दामि तव R. 1, 63, 19. VOP. 6, 16.

मुख्यनृप (मु० + नृप) m. = मुख्यराज् MBH. bh. 5.

मुख्यमन्त्रिन् (मु० + मन्त्रि) m. der erste Minister HR. 83, 18. Davon nom. abstr. ०मन्त्रिता f. RĪĀ-TAR. 3, 424. — Vgl. मन्त्रिमुख्य.

मुख्यराज् (मु० + राज्) m. Oberfürst, regierender Fürst TRIK. 3, 3, 288.

०राजन् H. an. 2, 311.

मुख्यशस्त्रम् (von मुख्य) adv. vor Allem, zunächst MBH. 3, 2292.

1. मुख्यार्थ (मुख्य + अर्थ) m. Hauptbedeutung, die ursprüngliche Bedeutung (eines Wortes) ÇĀṆK. zu BĀH. ĀR. UP. S. 201. SĀH. D. 13. Davon nom. abstr. ०त्व n. 11, 15, 16.

2. मुख्यार्थ (wie eben) adj. die ursprüngliche Bedeutung habend, in der ursprünglichen Bedeutung gebraucht SIDDH. K. zu P. 4, 2, 60.

मुग्दस N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339, a, 10.

मुग्दमु desgl. ebend. 339, b, 34.

मुग्स्थान desgl. ebend. 340, a, 10.

मुग्गू m. eine Hühnerart (दात्पूक) BHĀIPR. im ÇKDA.

मुग्ध s. u. मुक्.

मुग्धता (von मुग्ध) f. schlichte Einfalt, Naivität Spr. 2215.

मुग्धत्व (wie eben) n. Anmuth: मुग्धत्वस्य च यौवनस्य च सखे मध्ये मधुष्मीः स्थिता VIKR. 20.

मुग्धद्रुम् (मु० + द्रुम्) f. eine Schönängige Spr. 2709.

मुग्धधी (मु० + 2. धी) adj. dumm, einfältig, Einfaltspinsel KATHĀS. 61, 244.

मुग्धबुद्धि (मु० + बु०) adj. dass. KATHĀS. 61, 2.

मुग्धबोध (मु० + बोध) n. (sc. व्याकरणा) Einfältige aufklärend, Titel einer von Vopadeva verfassten Grammatik VOP. Einl. GILD. Bibl. 382. fg. 894. Verz. d. Oxf. H. 161, b, 12. ०कार् 113, b, 3. ०प्रदीप m. Titel eines Commentars zu jener Grammatik 161, b, 15. ०सुबोधिनी f. desgl. 290, a, 12. ०परिशिष्ट n. Nachträge zum Mugdhabodha COLEBR. Misc. Ess. II, 46.

मुग्धबोधिनी (मु० + बो०) f. (sc. टीका) Einfältige aufklärend, Titel eines Commentars des Bharatamalla zum Amarakosha (COLEBR. Misc. Ess. II, 56) und des Bharatamalla (wohl identisch mit dem Vorangehenden) zum Bhaṭṭikāvya (GILD. Bibl. 229).

मुग्धभाव (मु० + भाव) m. einfältiges Wesen, Unerfahrenheit BHĀG. P. 5, 8, 10. 3, 3, 4.

मुग्धवत् (von मुग्ध) partic. verwirrt, keine richtige Einsicht habend: सर्वार्थेषु MBH. 4, 677.

मुग्धाती (मुग्ध + अत आङ्) f. eine Schönängige Spr. 342. 1084. KATHĀS. 46, 192.

मुग्धाग्रणी (मुग्ध + अग्र) m. der Dümme unter den Dummen KATHĀS. 63, 180.

V. Theil.

मुग्धाचक्र (मु० + चक्र) n. Bez. eines best. mystischen Kreises Verz. d. Oxf. H. 88, a, 34.

मुङ्ग m. N. pr. eines Mannes RĪĀ-TAR. 7, 590.

मुङ्गट m. desgl. ebend. 8, 1092.

1. मुच्, मुञ्चति, ०ते DBĀTUP. 28, 136. P. 7, 1, 59. VOP. 11, 4. ved. मुञ्चति. und अमुग्धम्, मुञ्चतु Ind. St. 5, 340. 363. अमुचत् und अमुक्त VOP. 13, 1. मुचत्, मौक् 2. p. VS. 1, 25. मुक्त 3. pl. मोक्षीम् HARIV. 7082. मुन्तीय; मुमोच, मुमुच्ये, मुमुच्ये, मुमुच्ये, मुमुच्ये; मोक्षयति und ०ते, मोक्षा KAR. 2 aus SIDDH. K. zu P. 7, 2, 10. ved. मुमोक्तु, मुमुच्ये, अमुमुक्तम्, मुमोचत 2. pl., मुमोचति RV. 8, 18, 12. मुमोचतम् 73, 1. 4. losmachen, freimachen, befreien; loslassen, fahren lassen; med. pass. sich losmachen, entrinnen RV. 1, 24, 12. अवननीः 61, 10. सिन्धून् 93, 5. वर्तिका-म् 116, 14. ऋषीसादत्रिम् 117, 3. वरसः 7, 71, 5. यया निदा मुञ्चथ वन्दितारम् 2, 34, 15. आपो योक्ताणि मुञ्चत 3, 33, 13. 6, 74, 3. मृत्योर्मुन्तीय 7, 39, 12. 8, 24, 27. बन्धात् 40, 8. 9, 20, 5. मा ते कृत्या मुन्तत देव्यायाः 10, 87, 19. KAUC. 39. इपदादेव मुमुचानः (vgl. UNĀDIS. 2, 91) VS. 20, 20. अपो मुञ्चामि ich lasse Wasser 4, 13. अमुच्यत RV. 8, 33, 13. स पाङ्कस्य निर्णित्रो न मुच्यते 10, 27, 24. VS. 12, 98. स न दृश्यते ऽथ मुच्यते KĀND. UP. 6, 16, 2. मुच्यथै (मुच्येधम् BĀH. ĀR. UP. 3, 8, 12) ÇAT. BR. 14, 6, 8, 12. अमोचि प्रुक्ता रसः परस्तात् ist ausgefahren AV. 13, 2, 8. — अमुच्यन्नुषस्तस्य ज्याम् MBH. 4, 161. मुञ्चमां भद्र नावं तम् R. GORR. 2, 32, 13. VID. 238. मोक्षये स्वर्गवन्दीनां वेणीबन्धान् RAGH. 10, 48. मुक्तबन्धन Spr. 2472. ÇĀK. 73, 10, v. 1. नित्रो मुक्ता शिखाम् KATHĀS. 3, 118. वस्त्रात् शठ मुञ्च मुञ्च Spr. 688. तेन हि मुच्यतामभीपवः lass die Zügel schiessen ÇĀK. 3, 15, v. 1. मुक्तेषु रश्मिषु 8. मुक्तप्रङ्गार ausgezogen, abgelegt PANĀT. 36, 17. उक्षीषं मुमुचे BHĀṬṬ. 14, 95 soll nach einem Schol. so v. a. उ० परिदधे anlegen bedeuten. तल्पे मुक्तेरवपवैरशापिषि mit aufgelösten d. i. erschlafften Gliedern DAÇAK. in BENF. Chr. 190, 19. कण्ठम् die Kehle lösen so v. a. seine Stimme erheben: कण्ठं मुञ्चति च बर्हिषाः MRĀKĪ. 83, 6; vgl. मुक्तकण्ठ. प्राणान् Jmdes Lebensgeister lösen so v. a. Jmd das Leben nehmen: एष मे मुञ्चतु प्राणान्यदि पापं चराम्यदम् MBH. 3, 2982. figg. पदात्पदममुञ्चती den Fuss nicht von der Stelle lösend d. i. bewegend VID. 277. वीणिभिर्मुक्तमार्गः den Weg frei machen so v. a. aus dem Wege gehen MRGH. 46, v. 1. (für दत्त). मुञ्च मुञ्चस्व मैथिलीम् lass los MBH. 3, 16047. 10408. 15167. 15793. त्वं सक्तु प्राणिमुञ्चयाश्चिव मां युधि R. 3, 62, 3. अयं सचिवं मुञ्चति यदि पूज्यः संयतं मम श्यालम् । मोक्षा माधवसेनं ततो ऽहमपि बन्धनात्सद्यः ॥ MĀLAV. 7. ÇĀK. 40, 9. VID. 184. KATHĀS. 22, 194. 23, 109. अद्राशो मुच्यते राज्ञा M. 8, 202. MBH. 3, 15794. तन्मुच्यतां पञ्जरबन्धनादयं पती PANĀT. 192, 15. मुक्त freigelassen TRIK. 3, 3, 177. MBH. 3, 15795. Spr. 1819. VID. 267. KATHĀS. 4, 38. VET. in LA. (II) 22, 11. दर्शितानि कलत्राणि गृहे मुक्तमशङ्कितम् adv. Spr. 4186. वनाय — धेनु-मुषेर्मुमोच entliess die Kuh in den Wald RAGH. 2, 1. मुमोच कामचराय तम् VID. 330. मुञ्च नः साधयामः Spr. 366. कृपादाकृष्य मार्गं मुक्ता VET. in LA. (II) 17, 20. PANĀT. 128, 23. यद्येतेभ्यो मुच्यसे wenn du dich von ihnen befreist MBH. 3, 15715. मुच्यते कित्त्विषात् M. 11, 90. 79. 194. 227. 239. BHAG. 4, 16. मृत्युपाशाच्च सपुत्रा मोक्षसे MBH. 1, 5641. RAGH. 1, 72. तदा पितृणां मुमुचे स बन्धनात् 3, 20. 12, 23. येन (श्रीषधेन) मुच्यामहे रोगात् KATHĀS. 66, 32. नहि योगं प्रपश्यामि येन मुच्येयमापदः MBH. 1,